चारा चुकंदर

वानस्पतिक नामः *बीटा वल्गारिस*

कुलः अमरेंथेसी

चारा चुकंदर एक द्विवर्षीय जमीकन्दीय फसल है जिसको शुष्क और अर्धशुष्क जलवायु के कम पानी उपलब्धता वाले क्षेत्रों में उगाया जा सकता है और अप्रैल–मई के माह तक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। इसके पौधे का उपयोगी भाग मुख्य रूप से जड़ होती है हालाँकि चुकंदर की पत्तियों को भी हरे चारे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

पोषकता

चुकंदर का पूरा पौधा गुणवत्ता और पोषकता से भरपूर होता है क्योंकि इसमें 12–17 प्रतिशत शुष्क पदार्थ तथा शुष्क भार के आधार पर औसतन 8 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन, 0–5 प्रतिशत वसा, 6 प्रतिशत क्रूड रेशा के अलावा खनिज तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

उत्पादन तकनीक

जलवायु एवं मृदा

चुकंदर की खेती शुष्क और अर्ध शुष्क जलवायु में बलुई और बलुई–दोमट मृदा में जिसका पी.एच. मान 6–8 के बीच हो वह उपयुक्त होती है। चुकंदर की फसल हल्की क्षारीय मृदा एवं खारे पानी की स्थिति में भी आसानी से की जा सकती है।

खेत की तैयारी

चुकंदर के लिए खेत की तैयारी हेतु सर्वप्रथम एक जुताई मिट्टी पलट हल से फिर 1–2 जुताई हैरो से करनी चाहिए। खेत में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा संतुलित रखने और फसल में पोषक तत्वों की पूर्ति हेतु जुताई पूर्व गोबर की सड़ी हुई खाद (10–15 टन/हे.) का प्रयोग करना चाहिए।

प्रजातियाँ

चारा चुकंदर हेतु मुख्य प्रजातियाँ जामोन, मोनेरो, जे. के. कुबेर, स्प्लेंडिड, आई.आई.एस.आर. कंपोजिट–1, जेरोनिमो इत्यादि हैं।

बीज एवं बुवाई

चारा चुकंदर की बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर–नवंबर होता है। चारा चुकंदर की खेती हेतु प्रति हेक्टेयर 2 से 2.5 किलो बीज पर्याप्त होता है। चारा चुकंदर की अच्छी फसल हेतु एक हैक्टयर में एक लाख पौधे होने चाहिए। बीज को मैन्कोजेब व थिरम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके ही बुवाई करना चाहिए तथा बुवाई करने के तुरंत बाद सिंचाई करना चाहिए। चारा चुकंदर की बुवाई मेड़–नाली विधि से मेड़ों पर करें। मेड की दूरी आपस में 70 सेमी. रखें एवं मेड की ऊँचाई 20 सेमी. तक रखें। मेड पर बीज की बुवाई 20–25 सेमी. बीज से बीज की दूरी रखते हुए 2 से 2.5 सेमी. गहराई पर करें। चुकंदर की चारा वाली प्रजातियाँ कई अंकुर वाली होती हैं अतः बुवाई के 25–30 दिन बाद अनावश्यक पौध को निकाल के विरलीकरण करके एक जगह पर एक पौधा ही रखना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

चारा चुकंदर की अधिक उत्पादन क्षमता होने के कारण भूमि से अधिक मात्रा में पोषक तत्वों का अवशोषण होता है। इसलिए खेत में हर तीसरे वर्ष खेत की तैयारी के समय 15–20 टन प्रति हैक्टयर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद डालें तथा फसल को 100 किलो नत्रजन, 75 किलो फास्फोरस व 75 किलो पोटाश प्रति हैक्टयर की दर से उर्वरक देना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय देना चाहिए और नत्रजन की बची हुई आधी मात्रा दो बराबर हिस्सों में बुवाई के 30 व 50 दिन पर निराई के पश्चात् देना चाहिए।

जल प्रबंधन

चारा चुकंदर की कुल जल माँग 80–100 सेमी. होती है। प्रथम सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद व तदुपरांत आवश्यकतानुसार 10–12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण एवं पादप सुरक्षा

चारा चुकंदर में खरपतवार नियंत्रण हेतु बुवाई के 20–25 दिन बाद एवं 40–45 दिन बाद निराई–गुड़ाई करें तथा मेड़ों पर मिट्टी चढ़ायें। चारा चुकंदर में किसी खास रोग एवं कीट की समस्या नहीं होती है हालाँकि मृदा जनित कीटों से कंदों को बचने के लिए क्यूनॉलफॉस (1.5 प्रतिशत) को 25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिलाएं। जड़ गलन रोग की रोकथाम हेतु ट्राईकोडर्मा विरडी 1. 25 ग्राम या मैन्कोजेब कवकनाशी 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करना चाहिए। पत्ते खाने वाले कीड़ों से फसल को बचाने के लिए 5 प्रतिशत नीम के बीजों की खली के घोल का छिड़काव करना भी फायदेमंद होता है।

खुदाई एवं उपज

चारा चुकंदर के कंदों की खुदाई से 1 से 1.5 महीना पहले पत्तियों को जमीन सं 2–3 इंच ऊपर से काटकर पशुओं को चारे के रूप में खिलाना चाहिए। इसके पश्चात् फसल को सिंचाई के समय 25 किलो प्रति हैक्टेयर नत्रजन दें जिससे फसल तेजी से बढ़ेगी। जब नीचे की पत्तियाँ सूखने लग जाएँ व अन्य पीली पड़ने लग जाएँ तब इसके कंदों को खोद लें। आम तौर पर

यह फसल 120 दिन में तैयार हो जाती है किन्तु इसकी जड़ें जमीन में खराब नहीं होती इसलिए खुदाई में जल्दीबाजी न करें व रोजाना आवश्यकतानुसार कंदों को निकलकर पशुओं को खिलाते रहें। खुदाई के वक्त ध्यान रहे कि कंदों की बाहरी परत को नुकसान न पहुंचे। अच्छे प्रबंधन द्वारा एक हेक्टेयर से लगभग 80 टन हरा चारा कंद प्राप्त किया जा सकता है।

उपयोग विधि

तोड़ी गई पत्तियों और खुदाई किये हुए कन्दों को धो कर साफ करके छोटे–छोटे टुकड़ों (3–5 सेंटीमीटर) में काटकर सीधे ही जानवरों को खिला सकते हैं। चारा चुकंदर को अकेले एवं अधिक मात्रा में खिलाने से पशु में आफरा की समस्या आ सकती है इसलिए चारा चुकंदर को अन्य चारे और भूसे इत्यादि के साथ मिलकर ही खिलाएं। एक पूर्ण व्यस्क डेरी वाले पशु को धीरे–धीरे मात्रा बढ़ाते हुए 10–15 किलोग्राम (कन्द) प्रतिदिन के हिसाब से खिलाएं भेड़–बकड़ी के लिए 4–7 किलोग्राम प्रति पशु उपयुक्त है। जिन दिनों पशुओं को चुकंदर खिला रहे हैं उन दिनों इन्हें दिए जाने वाले बांटे की मात्रा आधी तक कम की जा सकती है। कंद को काटकर धूप में सुखाकर भंडारित भी किया जा सकता है।

प्रकाशक:

डॉ. अमरेश चन्द्रा

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान

ग्वालियर रोड, निकट पहूज बाँध, झाँसी–284003 (उत्तर प्रदेश)

0510-2730666 | @ icarigfri Jhansi

0510-2730833 | igfri.jhansi.56

director.igfri@icar.gov.in | IGFRI Youtube Channel

https://igfri.icar.gov.in | Kisan Call Centre 0510-2730241

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381, 9415113108

आई.जी.एफ.आर.आई./एस.सी.एस.पी./2023/फोल्डर/14

अनुसूचित जाति उप परियोजनांतर्गत

चुकंदर

संकलनकर्ता:

गौरेन्द्र गुप्ता, पुरूषोत्तम शर्मा, साधना पाण्डेय,
सुनील कुमार, अमित कुमार पाटील,
बिश्व भास्कर चौधरी, दीपक उपाध्याय,
बृजेश कुमार मेहता, राजेश कुमार सिंघल,
महेश एच.एस., मनजंगौड़ा एस.एस., मुकेश चौधरी,
अविनाश चंद्र, सचेन्द्र त्रिपाठी,
प्रतीक श्रीवास्तव एवं रोहित वर्मा

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

ग्वालियर रोड, झाँसी-284003 (उ.प्र.)